हंस और कछुआ

मगध देश में फुल्लोत्पल तालाब के किनारे दो हंस दोस्त संकट और विकट रहते थे जिनका एक कछुआ दोस्त भी था। उस तालाब में बहुत मछलियाँ भी थीं। एक दिन कुछ मछुआरे वहाँ पहुंच गए। उनकी निगाह कछुए और तालाब की मछलियों पर पड़ी। उन्होंने अगले दिन मछलियों और कछुए को पकड़ने का विचार किया। संकट और विकट ने उनकी बातें सुन लीं। उन्होंने मछलियों और कछुए को बात बता दी। कछुआ यह सुनकर घबरा गया। फिर उन सभी ने (हंसों और कछुए ने) मिलकर एक योजना बनाई बहुत सोच-विचार के बाद। उन्होंने निश्चय किया कि दो हंस डंडी के दोनों सिरों को पकड़ेंगे और कछुआ बीच में से उसे पकड़ेगा। पर कछुए को पूरे रास्ते में बात नहीं करना था। अगले दिन जब वे एक घर के ऊपर उड़ रहे थे, तब बच्चे

पतंग उड़ा रहे थे। सारे बच्चों में हल्ला मच गया। एक बच्चा बोला,- "देखो। कितना अद्भुत दृश्य है।"

दूसरा बच्चा बोला- "अगर वह कछुआ गिर पड़े, तो मैं उसे पालूँगा।"

तीसरा बच्चा बोला- "अगर वह कछुआ गिर पड़े, तो मैं उसे वहीं जाने नहीं दूँगा।"

अब कछुए का संयम रखना मुश्किल था। उसने कहा- "तुम सब क्या खाक पकड़ोगे मुझे!" इतना कहते ही वह गिर कर मर गया।